Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

November-2020, Volume : 07, Issue : 06, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

दीपोत्सवी अंक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में नवनिर्मित हस्तप्रत कन्जर्वेशन लैब में रासायनिक प्रक्रियाओं के द्वारा जीर्ण हस्तप्रतों का उपचार करते हुए ज्ञानमन्दिर के निष्णात कर्मचारीगण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-६, कुल अंक-७८, नवम्बर-२०२०

Year-7, Issue-6, Total Issue-78, November-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ **❖ सह संपादक ❖** **❖ संपादन निर्देशक ❖**

हिरेन किशोरभाई दोशी रामप्रकाश झा गजेन्द्रभाई शाह

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ नवम्बर, २०२०, वि. सं. २०७७, निज आश्विन कृष्ण पक्ष-३०

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
४.	अनेकार्थशब्दसन्दृब्ध केटलीक अप्रगट कृतिओ	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
५.	दीपावलीपर्व सज्झाय	डॉ.शीतलबेन शाह	२१
६.	ज्ञानपंचमीपर्व स्तवन	गजेन्द्र शाह	२५
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	२९
८.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	३१
९.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	३३

डाहइ डाहउं रिजवइ, गुणरी ऊवइ छइल्ल।
ते मूढा कुण रीझवइ, विण सीगडां बइल्ल॥

प्रत क्र. १३१०७१

भावार्थ- एक ज्ञानी व्यक्ति दूसरे ज्ञानी व्यक्ति को प्रसन्न कर सकता है और गुणों की अभिवृद्धि होती है। लेकिन बिना सींग वाले बैल जैसे मूर्ख को कौन प्रसन्न कर सकता है ?

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

नववर्ष की अनन्त शुभकामनाओं के साथ श्रुतसागर का यह दीपोत्सवी अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी व स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त आठ अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत भारतवर्ष में अहिंसा के प्रचार-प्रसार में जैनधर्म के विशेष योगदान का उल्लेख किया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक 'Awakening' से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें कथन के ऊपर विचारों के प्रभाव तथा उससे होनेवाले लाभ-हानि के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित **अनेकार्थ शब्दगर्भित कृतिसंग्रह** में से पाँच लघु कृतियों को प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत अलग-अलग पदों का अलग-अलग अर्थों में प्रयोग कर अजितजिन, पार्श्वजिन आदि प्रभु की स्तवना की गई है। द्वितीय कृति के रूप में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर की पालडी शहरशाखा में कार्यरत डॉ. शीतलबेन शाह के द्वारा सम्पादित **"दीपावलीपर्व सज्झाय"** की दो अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति में कर्त्ता ने दीपावली के आध्यात्मिक महत्त्व के ऊपर प्रकाश डाला है। तृतीय कृति के अन्तर्गत ज्ञानमन्दिर के कार्यकर्त्ता पंडित श्री गजेन्द्रभाई शाह के द्वारा सम्पादित **"ज्ञानपंचमीपर्व स्तवन"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता मुनि श्री राजरत्नविजयजी ने मात्र १४ गाथा की इस लघुकृति में ज्ञानपंचमी के पवित्र पर्व पर की जानेवाली ज्ञान की आराधना तथा ज्ञान की महत्ता को वर्णित किया है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के रूप में इस अंक में पुण्यविजयजी लिखित लेख **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत जनसामान्य हेतु जैन कथा साहित्य की उपयोगिता तथा उसकी महत्ता के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

गतांक से जारी **"पाण्डुलिपि संरक्षण विधि"** शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञानमंदिर के पं. श्रीराहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा हस्तप्रतों का सूचीकरण तथा आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर की सूचीकरण पद्धति की विशिष्टता के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत मुनि श्री गुणहंसविजयजी द्वारा रचित **"शास्त्राभ्यासनी कला"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तक में परमपूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों के द्वारा किए जानेवाले अभ्यास की सुन्दर और उपयोगी पद्धति के विषय में जानकारी दी गई है, जिसके कारण इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ जाता है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

दुर्गुणो पर जे जे अंशे जय मेळववामां आवे छे, ते ते अंशे जैनत्व गणाय छे। दुर्गुणो पर जय मेळववो, ए विश्वव्यापक धर्म छे। काम क्रोधादि दुर्गुणो पर जय मेळववाथी आत्मानी वास्तविक शान्ति प्राप्त थाय छे एम जैनधर्म शिखवे छे, तेथी जैनधर्मनो विश्वना मनुष्योए खरी शान्ति प्राप्त्यर्थे फेलावो करवानी खास जरूर छे। आत्माना वास्तविक ज्ञानादि धर्मने जैनधर्म दर्शावे छे, अने तेनी प्राप्तिना सम्यग् उपायोने जैनधर्म जणावे छे, तेथी जैन धर्मनो जगत्मां सर्वत्र प्रचार थाय तो विश्ववर्ति मनुष्यो स्वकीय वास्तविक धर्मने अवबोधवा समर्थ थइ शके। **अहिंसा परमो धर्मः** दया समान कोइ धर्म नथी।

अहिंसाना प्रचारथी जगत्मां सर्व जीवोने शान्ति मळे छे. जैनधर्मनो विश्वमां सर्वत्र प्रचार करवाथी विश्वमां सर्वत्र युद्धो, खुनो, पशुओ विगेरेनी कतल थती अटकी जाय अने तेथी विश्वमां सर्वत्र खरेखरी शान्ति स्वयमेव रही शके छे एम सम्यग् अवबोधाय छे। जैनधर्मना पालको दयाना गुणवडे विश्वमां दयाधर्मीओ तरीके प्रख्यात छे। यदि जैनधर्मनो सर्वत्र प्रचार थाय तो सर्वत्र परमात्मानुं साम्राज्य प्रवर्ते एम कथवामां अतिशयोक्ति किंचित् पण नथी। जैनधर्मे भारतवासीओने दयादि गुणोनो घणो लाभ आप्यो छे।

भारतदेशमां दयानी मुख्यता अन्य देशोनी अपेक्षाए प्रवर्ते छे, ते खरेखर जैनधर्मना प्रतापे छे। दयाळु मनुष्योनो जगत्मांथी नाश थाय छे एम भूतकालमां बन्युं नथी, वर्तमानमां बनतुं नथी, अने भविष्यमां बननार नथी। पक्षीओमां कबुतर पंखी सडेलो दाणो पण खातुं नथी तो पण तेनी संख्यामां कागडाओ वगेरे मांसाशी पक्षीओ करतां घटाडो थएलो देखवामां आवतो नथी।

जैनो दयाथी बायला बनी गया अने तेथी देश परतंत्र थयो एम पण कथी शकाय तेम नथी, कारण के विश्वमां सर्वदेशोमां सर्वत्र दया प्रवर्ते तो कोण राजा कोना उपर चढाइ करे अर्थात् कहेवानुं के कोइना पर कोइ चढाइ करे नहीं, अने कोइने कोइ मारी नाखवा प्रयत्न करी शके ज नहीं। पशुओनो अने पंखीओनो नाश थतो पण अटकी शके। मनुष्यो पण परस्पर एक बीजाओनुं खून करी शके नहि। इत्यादि अनेक प्रकारे राजाओने अने प्रजाओने जैनधर्मथी लाभ मळी शकवाना हेतुथी अनन्तवर्तुलरूप जैनधर्मनो फेलावो करवानी जरूर छे।

आ विश्वमां सर्वत्र सर्वजीवो जीववाने ईच्छे छे, पण कोइ मरवाने इच्छतुं नथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वजीवोने पोताना आत्मसमान गणीने कोइनी पण हिंसा करवामां प्रवृत्ति करवी नहि एम जैनधर्म बोध आपे छे। अतएव **आत्मवत् सर्व भूतानि यः पश्यति स पश्यति** ए सूत्रनी कहेणीथी तथा रहेणीथी सिद्धि करवाने विश्वमां सर्वत्र जैनधर्मनो प्रचार करवाने दयाना मानवदेवोए कटिबद्ध थवुं जोइए। दया ए प्रत्यक्ष अनुभवमां आवनार महाधर्म छे अने ते व्यापक धर्म छे। ज्यां दयानो घोष रह्यो होय छे त्यांथी आसुरी भावनावाळा दुर्गुण दैत्यो पलायन करी जाय छे।

प्रभुना हृदयमांथी दयारूप धर्मनो झरो विश्वना श्रेय माटे वह्यो छे तेनो सर्वत्र प्रचार करवो जोइए। विश्वव्यापक दयाधर्म छे अने ज्यारे ए खरी रीते सर्वत्र फेलाशे त्यारे विश्वमनुष्यो प्रभुने प्राप्त करनारा थशे। जीवोने रजोगुणथी अने तमोगुणथी मुक्त करीने सत्त्वगुणमां लावनार जैनधर्म होवाथी जैनधर्मने पाळवानी तथा तेनो विश्वमां सर्वत्र फेलावो करवानी घणी जरूर छे। जैनधर्ममां जे जे सद्गुणोने कथ्या छे, ते ते सद्गुणो एवा छे के ते जे जे मनुष्योमां रहे छे ते ते मनुष्योनी व्यावहारिक तथा धार्मिक उन्नति कर्या विना रहेता नथी।

आर्यावर्त्तमां जैनोए अद्यापि पर्यन्त व्यावहारिक तथा आत्मिकोन्नति जाळवी राखी छे ते खरेखर जैनधर्मना प्रतापथी अवबोधवुं। रजोगुण अने तमोगुणवडे थनारी उन्नति खरेखर कोइ पण देशमां सदा रहेती नथी, अने रजोगुण अने तमोगुणनी उन्नतिथी अशान्ति मारामारी फेलाय छे, अने ए ज्यां उत्पन्न थाय छे तेनोज ते नाश करनारी बने छे। अत एव मनुष्ये जो व्यावहारिक तथा धार्मिकोन्नति के जे खरेखरी सुखनी आपनारी छे तेने प्राप्त करवी होय तो जैनधर्मनी आराधना करवी जोइए, अने तेने विश्वमां फेलाववा प्रयत्न करवो जोइए।

विश्वमां सर्वदेशोमां प्रवर्त्ततां सर्वराज्योनी पडतीना इतिहासो तपासवामां आवे अने विश्वमां सर्वदेशोनी सर्वप्रजाओनी पडतीना इतिहासो तपासवामां आवे तो पडती करवा अने कराववामां ते ते देशना रजोगुणी अने तमोगुणी राजाओ तथा रजोगुण अने तमोगुणवाळी प्रजा ज हती एम सिद्ध थशे। सर्वकालमां आ प्रमाणे प्रवर्त्ते छे। जैनधर्म खरेखर रजोगुण अने तमोगुणथी दूर रहेवानुं शिखवे छे, अने सत्त्वगुण सेववानुं शिखवे छे तेथी विश्वमां सर्वदेशना राजाओ अने प्रजाओमां सत्त्वगुणना प्रचारार्थे जैनधर्मनो फेलावो थवानी जरूर छे, कारण के तेथी सर्वदेशोमां खरेखरी व्यावहारिक तथा धार्मिक उन्नति सदाकाल माटे स्थिर थइ शके।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –६८९-६९०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

If we are in the company of noble people we get noble thoughts and our speech also is noble because of our noble thoughts. Even when he was extremely angry, Mahatma Gandhi never used an abusive word beyond using the expression "mad fellow."

Disciplined language leads to progress and happiness, while, indecorous language brings infelicity and unhappiness. The tongue (that is speech) that can cool down the fire that consumes life, can also cause rivers of blood to flow. That is why, we should speak after thinking well.

This has been said by a poet by name Soktha. It means that words are precious. "Speak such valuable words if you can. Give expression to your thoughts after thinking well."

We should cultivate the habit of speaking out our thoughts after filtering them, with the sieve of thoughtfullness. An English writer says, "Look before you leap and think before you speak."

A certain king had a dream in which he saw all his thirty-two teeth falling off. The next day, he asked his astrologers to interpret the significance of his dream. One said, "All the thirty-two members of your family will die one after another before you." On hearing this, the king was greatly sad. Another astrologer told the king that among all the members of his family, he was endowed with the longest span of life. This made the king cheerful. Both the astrologers said the same thing but there was a difference in the way in which they expressed the idea. The first one lacked cleverness and spoke bluntly. The second one was clever and he said the same thing in a pleasing manner. That is why, the two statements had two opposite effects on the king.

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेकार्थशब्दसन्दब्ध केटलीक अप्रगट कृतिओ

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

(गतांक से जारी...)

(२) श्री कमलविजयगुरुस्तोत्रम्

आ स्तोत्रना आद्य पद्यना पाठने आधारे कर्तानाम अने कृतिनाम नक्की करवुं अघरुं हतुं, वली 'जैन परंपराना इतिहास' मां पण कर्तानी परंपरा अंगे कोई स्पष्ट नोंध न हती। त्यारे विज्ञप्तिपत्र विशेषांक (अनुसंधान-) ना अंकमां २ वात मळी- (१) अनु.६० मां 'जीर्णदुर्गथी विजयप्रभसूरिने उदयविजयजीए लखेल पत्र'-तेमां 'अत्र च कमलविजयाह्वानाः........' पदथी तेओनो नामोल्लेख छे। (२) अनु. ६५ मां- 'श्रीपुर चातुर्मास रहेल विजयदेवसूरिजीने उदयविजयजीए लखेल पत्र'- तेमां तो तेमणे तेमनो गुरु तरीके स्पष्ट उल्लेख करेल छे।

'विबुधमांहि सीरोमणि, कमलविजय गुरुसीस।
उदयो आनंद अतिघणो, उदयविजय आशिष' ॥१७॥

आम कर्तानाम अने कृतिनाम स्पष्ट थया। तेथी कृतिनी रचना १७मी सदीनी स्वीकारी शकाय कृतिकारे ३२ वखत अलग-अलग पदो साथे 'हरि' शब्द प्रयोजी गुरुभगवंतना विशेषणो काव्यमां गुंथ्या छे। कृतिनो पहेलो श्लोक द्रुतविलम्बित छंदमां, शेष पद्यो तोटक छंदमां छे। प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत अमने आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामांथी प्राप्त थइ छे.

श्रीउदयविजयकृतं 'हरि'शब्दसन्दृब्धं

श्रीकमलविजयगुरुस्तोत्रम्

कविपदं विपदन्तकरं स्तुवे, कमलतोऽमलतो विजयाह्वयम् (यः)।
गुरुमहं रुमहं(?) हरिशब्दतो, विजयनं जयनं विजयोदयम् ॥१॥ [द्रुत०]

प्रणतप्रवरोदयदेशहरिं[१], विजवंशघनाश्रयसप्तहरिम्[२]।
शमतागतनिर्जितहारिहरिं[३], जगतीजनगूढपथान्महरिम्[४] ॥२॥ [तोटक]

वचनादिगपास्तकुवादिहरिं[५], कुधतिप्रकराशुगहानिहरिम्[६]।
वृजनः(न)व्रजपांशुविनाशहरिं[७], तनुरश्मिपराजितजात्यहरिम्[८] ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अशुभामृतवर्जितसूरिहरिं[९], समयाप्तवचोविदितान्यहरिम्[१०] ।
परदर्पघटैकमतङ्गहरिं[११], प्रणमज्जनकष्टतमिस्रहरिम्[१२] ॥३॥

स्ववशीकृतपञ्चहृषीकहरिं[१३], जनलोचनचारुचकोरहरिम्[१४] ।
हृदयोद्भवकुण्डलिचक्रहरिं[१५], क्रमणद्वयसेवकदत्तहरिम्[१६] ॥४॥

स्वविनेयदनूद्भवशिष्ट(शास्ति)हरिं[१७], श्रितमां(मा)नवदुगर्तिकंसहरिम्[१८] ।
करणोत्तमरूपरुमास्तिहरिं[१९], कवितार्जनसिद्धिकृदेकहरिम्[२०] ॥५॥

भवसन्तिततारकघातहरिं[२१], सुखराशिविधानतृतीयहरिम्[२२] ।
प्रतिघोदयभूघनजन्महरिं[२३], जननक्षणपावनितात्महरिम्[२४] ॥६॥

सुखसंयमसागरवासहरिं[२५], रमणीयरमादिकसङ्गहरिम्[२६] ।
अवधीकृतविष्टपजन्तुहरिं[२७], शमतो [प्र]शमीकृतरोषहरिम्[२८] ॥७॥

वसुसूनुसुसूनु(?)विशिष्टहरिं[२९], मृदुरोमविराजिरुगस्तहरिम्[३०] ।
करपुस्तकदर्शितप्रष्टहरिं[३१], शुभलक्षणसौरभलक्ष्महरिम्[३२] ॥८॥

॥ इति ३२ रूप ॥

टी. १. ...(?), २. सूर्य(?), ३. ...(?), ४. ...(?), ५. हस्तिः, ६. ...(?), ७. पवनः, ८. सुवर्णम्, ९. ...(?), १०. लोकान्तरम्, ११. सिंहः, १२. किरणानि(?), १३. कपिः, १४. चन्द्रः, १५. ...(?), १६. श्रीः, १७. शुक्रः(?), १८. कृष्णः, १९. ...(?), २०. ...(?), २१. कार्तिकेयः, २२. शनिः, २३. ...(?), २४. वंशः, २५. विष्णुः, २६. ...(?), २७. ...(?), २८. अग्निः, २९. ...(?), ३०. ...(?), ३१. ...(?), ३२. ...(?)।

[अत्र काव्ये इमेऽर्था अस्माभिः योजिताः। तेषु ये केऽपि कर्तुः भावं नाऽनुसरन्ति तदर्थे क्षन्तव्याः वयम्।]

(३) श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथस्तोत्रम्

११ पद्योमां रचायेल प्रस्तुत कृतिमां कविए भिन्न-भिन्न ४० अर्थमां 'सारंग' शब्द गोठवी श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथप्रभुनी स्तवना करी छे। कृतिमां १६ मात्रा वालो मात्रासमक छंद कविए प्रयोज्यो छे, छतां क्यांक-क्यांक १७ मात्रा पण जोवा मळे छे। प्रस्तुत कृतिने 'स्तोत्र' करता 'गीत' के 'गेयकाव्य' कहेवुं वधुं योग्य लागे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपा. श्रीनयविमलविरचितं 'सारङ्ग'शब्दार्थमयं

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथस्तोत्रम्

श्रीमत्पार्श्वजिनं सारङ्गं[१], प्रणत जना जिनततिसारङ्गम्[२] ।
वामाकुक्षिसरःसारङ्गं[३], भविमानसमानससारङ्गम्[४] ॥१॥

अश्वसेनकुलजलधिसारङ्गं[५], संयमितोद्धतहृदयसारङ्गम्[६] ।
वचनमधुरिमाधरितसारङ्गं[७], निजनिगरणतर्जितसारङ्गम्[८] ॥२॥

सुक्षतलतासेचनसारङ्गं[९], श्वासामोदविजितसारङ्गम्[१०] ।
देहकान्तिभर्त्सितसारङ्गं[११], नयनविनिर्जितवरसारङ्गम्[१२] ॥३॥

ज्ञानविभावगणितसारङ्गं[१३], संशयतम(मो)भेदनसारङ्गम्[१४] ।
दुर्द्धरकर्मद्विपसारङ्गं[१५], कुगतिकलाचकवं सारङ्गम् (?)[१६] ॥४॥

करपदकोमलजितसारङ्गं[१७], प्रमुदितजनवीक्षितसारङ्गम्[१८] ।
वपुदित[प्रमुदित]तृषितभविकसारङ्गं[१९], योगिहृदयपङ्कजसारङ्गम्[२०] ॥५॥

निजनासान्यक्कृतसारङ्गं[२१], दानगुणैर्दासितसारङ्गम्[२२] ।
निर्जितसज्जनतासारङ्गं[२३], कामितफलदायकसारङ्गम्[२४] ॥६॥

उपशमसाररसालसारङ्गं[२५], ध्यानदहनदितसुकृतसारङ्गम्[२६] ।
विस्तृतसद्दर्शनसारङ्गं[२७], सुस्वरतातर्जितसारङ्गम्[२८] ॥७॥

भ्रूयुगलार्जितसामिसारङ्गं(?)[२९], बुधजनसेवितसमयसारङ्गम्[३०] ।
स्तुतिमुखरीकृतशचिसारङ्गं[३१], पदयुगनाथितसमयसारङ्गम्[३२] ॥८॥

सुरनिकरैर्निर्मितसारङ्गं[३३], दिव्यध्वनिनाहृतसारङ्गम्[३४] ।
प्रकटितसद्देशनासारङ्गं[३५], दशनद्युतिमन्दितसारङ्गम्[३६] ॥९॥

मङ्गलकमलाकेलिसारङ्गं[३७], नयविमलप्रवचनसारङ्गम्[३८] ।
लक्ष्मणदम्भ(म्भा)श्रितसारङ्गं[३९], मञ्जुलमङ्गलरत्नसारङ्गम्[४०] ॥१०॥

इति सारङ्गशब्दार्थैः, संस्तुतः पार्श्वतीर्थपः ।
शङ्खेश्वरपुरोत्तंस-स्तन्यात् मङ्गलमालिकाम् ॥११॥(अनु.)

॥ इति सारङ्गशब्दार्थमयं पार्श्वनाथस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टी. १. सारं-बलं घनं माहात्म्यं वा गच्छतीति सारङ्गः, तं सारङ्गम् । २. इन्द्रम्, ३. कमलम्, ४. हंसम्, ५. चन्द्रम्, ६. कपिम्, ७. सुधाम्, ८. शङ्खम्, ९. मेघम्, १०. कर्पूरम्, ११. मदनम्, १२. खञ्जनम्, १३. सूर्यम्, १४. दीपम्, १५. सिंहम्, १६. ...(?), १७. रक्तकमलम्, १८. मुखम्, १९. चातकम्, २०. भृङ्गम्, २१. उर(कीरम्)?, २२. मन्दारम्, २३. उपमानम्, २४. चिन्तामणिम्, २५. पिकम्, २६. अगुरुम्, २७. चन्दनछवीं(?), २८. कच्छपिं(पीं), २९. अर्द्ध-चापम्, ३०. समुद्रम् (?), ३१. ...(?), ३२. वसुधा, ३३. पुष्पप्रकरम्, ३४. मृगम्, ३५. गङ्गा, ३६. धवलिमा(?), ३७. गृहम्, ३८. नदी(?), ३९. नागम्, ४०. रोहणाचलम्(?),

[अत्र काव्ये 'सारङ्ग'शब्दस्य अर्थाः प्रतिलेखकेन टीप्पण्याम् एव दर्शिताः ।]

(४) श्रीअजितजिनस्तवः

पूर्व कृतिनी जेम प्रस्तुत कृतिमां पण कविए ४४ अर्थमां 'हरि' शब्द प्रयोजी 'श्रीवापिकापुरि(वाव)' नगरना श्रीअजितनाथप्रभुनी स्तुति करी छे। रचना खूब रसाल छे। कृतिनुं १ लुं पद्य 'आर्या' छंदमां, छेल्लुं 'वसन्त०' छंदमां अने शेष पद्यो 'त्रोटक' छंदमां रचायेला छे। कृतिनी रचना 'वाव' नगरमां थई जणाय छे।

उपरोक्त बंने कृतिना कर्ता 'श्रीनयविमलजी' छे। त्रीजी कृतिमां तेमणे पोतानी गुरुपरंपरा पण जणावी छे। तेमनुं जीवन अने कार्य आम तो प्रसिद्ध ज छे। छतां तेमनो टूंक परिचय नीचे मुजब कही शकाय।

जन्म सं.१६९४-भीनमाल, माता कनकावती, पिता वासव शेठ, ८ वर्षे दीक्षा, गुरु पं. श्रीधीरविमलजी, दीक्षानाम नयविमल, सं.१७२७ मां, पंन्यासपद-सं.१७४८ मां, विजयप्रभसूरिजी हाथे आचार्यपदप्राप्ति-आचार्यपदनाम ज्ञानविमलसूरिजी-जीवनमां १७ अंजनशलाका करावी-सुरत-सैयदपुरामां नंदीश्वरद्वीपनी रचना करावी अनेक ग्रंथरचना करी-८० वर्षनो चारित्र पर्याय-सं.१७८२ मां खंभातमां कालधर्म।

तेमणे जंबूस्वामी रास, साधुवंदना रास, योगद्रष्टिनी सज्झाय, आनंदघनचोवीसी (बालावबोध), ध्यानमाला(टबो), प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति तथा अनेक स्तवन-सज्झाय-थोय-चैत्यवंदनादिनी रचना करी छे। (जैन परं इति. भा.४, पृ. ७०-७१-७२)

उपरोक्त आ बंने कृतिओनी झेरोक्ष अमने विद्वद्वर्य पू. मुनिराज श्रीधुरंधरवि. म. पासेथी प्राप्त थई छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीनयविमलविरचितः 'हरि'शब्दनिबद्धः

श्रीअजितजिनस्तवः

॥ऐं॥ ऐँ नमः।। नत्वा क्रमकजयुगलं, सद्विज्ञान-तत्त्वज्ञानदक्षगुरोः ।
मनुजगणैः कृतसेवं, देवं वन्देऽहमजिताख्यम् ॥१॥ (आर्या)

प्रणमामि जिनं जिनराजहरिं[१], निजवक्त्रविनिर्जितचारुहरिम्[२] ।
भविकाम्बुजभासनदीप्रहरिं[३], यमितातुलचञ्चलचित्तहरिम्[४] ॥२॥ (तोटकम्)

वररागमतङ्गजभेदहरिं[५], करणोर[६]गयन्त्रणजय्यहरिम्[६अ] ।
सुदृशोत्करचित्तरसालहरिं[७], दुरितोत्कररेणुसमूहहरिम्[८] ॥३॥

पदपङ्कजनामितसर्वहरिं[९], गमनाधरितप्रबलैकहरिम्[१०] ।
अयशोगुरुपत्रघटीन्ध्रहरिं(?)[११], मदनाशुभवारणचण्डहरिम्[१२] ॥४॥

स्वकचारुपिचण्डजितैकहरिं(?)[१३], समयागमपद्धतिसृष्टिहरिम्[१४] ।
ममतातरुकर्त्तनतीक्ष्णहरिं[१५], जितशत्रुनृपान्वयसिन्धुहरिम्[१६] ॥५॥

मनुजन्ममनोगतभावहरिं[१७], विजयोदयकन्दरशायिहरिम्[१८] ।
तनुकान्तितिरस्कृततारहरिं[१९], धृतरागनिबर्हणतीव्रहरिम्[२०] ॥६॥

कुमतक्रुचशैलभिदेकहरिं[२१], भवसागरशोषणसाधुहरिम्[२२] ।
हरिराशि[२३]विराजितचारुहरिं[२४], अरुजाक्षरपत्तनधुर्यहरिम्(?)[२५] ॥७॥

वरतुर्यमहाव्रतभारहरिं[२६], शुभगुल्मिनीवल्लवनैकहरिम्[२७] ।
अतितीव्रपरिसहजिष्णुहरिं[२८], कठिनान्तरवैरिविकालहरिम्[२९] ॥८॥

सुमतिव्रततिस्थितिचारुहरिं[३०], गुणमौक्तिकजन्मनिवृद्धहरिम्[३१] ।
भवसिन्धुपतज्जनतैकहरिं[३२], निजनक्रविनिर्जितभव्यहरिम्[३३] ॥९॥

परवादिवचःपवनैकहरिं[३४], सुदृगङ्गिमनःसरसीद्धहरिम्[३५] ।
विषयाचलभेदननव्यहरिं[३६], विशदीकृतचिद्गुणतैकहरिम्[३७] ॥१०॥

अशुभोत्करकाननदीप्रहरिं[३८], भविभावविभावनचारुहरिम्[३९] ।
दशनद्युतिभर्त्सितसर्वहरिं[४०], जनताप्रतिपूजितपूज्यहरिम्[४१] ॥११॥

स्ववचोभिरमर्षितचारुहरिं[४२], ततमानमहीधरभेदहरिम्[४३] ।
निजदानविगर्हितदेवहरिं[४४], प्रणमामि जिनं जिननाकिहरिम्[४५] ॥१२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्थं स्तुतोऽजितजिनो जितचित्तजन्मा[४६], श्रीवापिकापुरि नयाद् विमलेन भक्त्या।
प्राज्ञप्रकाण्डविनयाद् विमलांह्रिपद्म-सेवासुधीरविमलाख्यगुरुप्रसादात् ॥१३॥[वसन्त०]

॥ इति हरिशब्दस्यार्थनिबद्धं जिनस्तवः ॥

टी. १. राजानम्, २. चन्द्रम्, ३. सूर्यम्, ४. कपिम्, ५. अङ्कुशम्, ६. इन्द्रियम्, ६. गरुडम्, ७. पिकम्, ८. वायुम्, ९. इन्द्रम्, १०. हंसम्, ११. पारदम्, १२. ...(?), १३. केशवम्, १४. ब्रह्माणम्, १५. कुठारम्, १६. सरः कमलम्, १७. गुरुम्, १८. सिंहम्, १९. स्वर्णम्, २०. पाशम्, २१. कार्तिकम्(?), २२. अगस्तिम्, २३. वृषभम्(?), २४. जन्म...(?), २५. अश्वम्, २६. वृषभम्, २७. मेघम्, २८. वासुदेव-बलदेवम्, २९. यमम्, ३०. वृक्षम्, ३१. वंशम्(?), ३२. नावम्, ३३. कीरम्, ३४. सर्पम्, ३५. मीनम्, ३६. जलप्रवाहम्, ३७. दीपम्, ३८. अग्निम्, ३९. आदर्शम्, ४०. मुक्तामणिम्, ४१. उपमानम्(?), ४२. सुधाम्, ४३. वज्रम्, ४४. कल्पवृक्षम्, ४५. इन्द्रम्, ४६. कामः।

[अत्र काव्ये 'सारङ्ग'शब्दस्य अर्थाः प्रतिलेखकेन टीप्पण्यामेव दर्शिताः।]

(५) श्रीपार्श्वजिनलघुस्तवनम्

प्रस्तुत रचना 'सारङ्ग' शब्द निबद्ध पार्श्वजिनस्तवना स्वरूप छे। लोकप्रसिद्ध 'श्री शत्रुंजयतीरथ सार........' पदथी शरु थता श्रीशत्रुंजयनी थोयना रागमां गवाता आ काव्यना दरेक पद्यो अर्थनी दृष्टिए पण मजाना छे। कृतिकारश्रीए पोतानुं 'रामविजय' नाम अने रचना सं.वि.१५७२(?) काव्यना अंत्यपद्यमां जणाव्या छे। गच्छनुं नाम जणाव्युं नथी ।

कृतिनुं नाम 'पार्श्वजिनलघुस्तवन' होइ अन्य कोइ 'बृहद्काव्य' पण प्रस्तुत कर्ताए रच्युं होइ शके एवुं अनुमानित थाय छे। ते प्राप्त थाय तो श्रीसंघने विशेष लाभ थाय ।

प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत 'आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा-गांधीनगर' मांथी प्राप्त थई छे।

श्रीरामविजयकृतं 'सारङ्ग'शब्दयुतं

श्रीपार्श्वजिनलघुस्तवनम्

वामासुत(तं) त्रिभुवनसारङ्गं[१], वन्दे मर्दितमदसारङ्गं[२], निस्तारितसारङ्गम्[३]।
प्रणतसुरासुर[नर]सारङ्गं[४], वादिवृन्दवारणसारङ्गं[५], भविककुमुदसारङ्गम्[६] ॥१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्वनिगम्भी(भी)रगर्जनसारङ्गं[७], अघरजगञ्जहरणसारङ्गं[८], पुण्यतविषसारङ्गम्[९] ।
वरतरसिंहासनसारङ्गं[१०], दिग्धवलनयस(शो)भरसारङ्गं[११],
सुरविरचितसारङ्गम्[१२] ॥२॥

प्रवरान्वयदीपनसारङ्गं[१३], अधरशोणिमनिर्जितसारङ्गं[१४], मुक्तचक्रसारङ्गम्[१५] ।
अत्यु(त्र्यु)द्धु(द्धू)निगरणसारङ्गं[१६], अनुक्र(कृ)ततनुछविशितसारङ्गं[१७],
दमितेन्द्रियसारङ्गम्[१८] ॥३॥

क्रोधाचलदारणसारङ्गं[१९], मानभुजङ्गजङ्गमसारङ्गं[२०], मायावल्लिसारङ्गम्[२१] ।
लोभमतङ्गगन्धसारङ्गं[२२], मनुजमानसमानससारङ्गं[२३],
ध्वस्तमोहसारङ्गम्[२४] ॥४॥

आननश्वासरुचिरसारङ्गं[२५], दर्शनघनजनतासारङ्गं[२६], मण्डितध्वजसारङ्गम्[२७] ।
स्पर्शनभारसहनसारङ्गं[२८], रोधितचपलचित्तसारङ्गं[२९], मौलिछत्रसारङ्गम्[३०] ॥५॥
स्थाने नयनयुगं सारङ्गं[३१], अङ्गतरङ्गसुरभिसारङ्गं[३२], ध्वानशिखासारङ्गम्[३३] ।
पदपङ्कजसुरपतिसारङ्गं[३४], सदृशकण्ठकन्दलसारङ्गं[३५],
मधुरस्वरसारङ्गम्[३६] ॥६॥

स्तोत्रं श्रीजैनराजं विरचितमधिकं प्राप्य सान्निध्यमेत-
दब्दे जैनप्रमाने(णे) नयन-जलनिधो(धि)-चन्द्रपक्षे प्रयुक्ते ।
सारं सारङ्गशब्दे:(दैः) श्रवणपुटसुखं कारकं कामितस्य,
श्रीरामादो(दौ)विजये (?) हितकरममलं शृण्वतां श्रेयसेऽस्तु ॥७॥ [स्रग्धरा]

॥ इति श्रीसारङ्गशब्दयुतं श्रीपार्श्वजिनलघुस्तवनम् ॥

टी. १. आभूषणम्, २. हस्तिन्, ३. सर्पः, ४. स्वामी, ५. सिंहः, ६. चन्द्रः, ७. मेघः, ८. वायुः, ९. ...(?), १०. ...(?), ११. ...(?), १२. छत्रम्, १३. दीपकः, १४. कमलम्, १५. ...(?), १६. राहुः(?), १७. रत्नम्(?), १८. अश्वः, १९. वज्रः/कुठारः(?), २०. गरुडः, २१. तलवारः, २२. गन्धहस्तिन्(?), २३. राजहंसः, २४. पर्वतः, २५. कर्पूरः(?), २६. ...(?), २७. ...(?), २८. पृथ्वी(?), २९. कपिः, ३०. ...(?), ३१. ...(?), ३२. ...(?), ३३. ...(?), ३४. ...(?), ३५. ...(?), ३६. कोकिला ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[अत्र सप्तम श्लोकस्य चतुर्थचरणे छन्दोभङ्गः दृश्यते।] [इमेऽर्था अस्माभिः संयोजिताः। तेषु ये केचिद् स्तोत्रकर्तुर्भावं नानुसरन्ति, तदर्थं क्षन्तव्याः वयम्।]

(६) श्रीवीतरागशब्दस्य षष्ठिरर्थाः

'वीतराग' शब्दनी आगळ अने पाछळ अलग-अलग अक्षर जोडी अहीं 'वीतराग'पदने प्रभुस्तुति स्वरूपे ६० वार प्रयोजवामां आव्यु छे। मुख्यतया आत्मनेपद धातुओनो विध्यर्थप्रयोग अने 'राग' शब्दना कोषगत विविध अर्थो ज कृतिनो आधार छे। कृति थोडी क्लिष्ट होवाथी तेमज थोडा स्थळे हस्तप्रतनो पाठ खंडित अने दुर्वाच्य होवाथी अमे यथावत् तेने प्रकाशित करी छे। अनेक टीप्पणो जोतां कृति कर्ताए पोते लखी होय तेवुं मानवुं योग्य लागे छे। कृतिनुं आद्यपद्य शार्दूल० छंदमां, २ थी ६ पद्य वसन्त० छंदमां, ७मुं पद्य इन्द्र० छंदमां, ८ थी १८ पद्य उपेन्द्र० छंदमां, पुनः१५ थी १६ पद्य इन्द्रवज्रा छंदमां निबद्ध छे।

कृतिकार-'साधुरत्न' नामना साधु छे। तेमना विशे अन्य साधनोना अभावे कशुं जणावी शकाय तेम नथी, छतां प्रतनुं पडिमात्रालेखन अने फुल्लिकास्थान जोतां रचना-लेखन १५ मां सैकानुं कल्पी शकाय छे। ऐतिहासिक ग्रंथोना आधारे मात्र एटलुं ज जाणी शकाय छे के ते समये 'साधुरत्न' नामना समान नामवाला (मुनि/आचार्य) साधुओ धर्मघोषगच्छ-पूनमियागच्छ-आगमगच्छ-नागोरीतपागच्छ-तपागच्छमां थया छे। साथे उपरोक्त कोइ आचार्यश्रीए (१) यमकश्लोक अने (२) 'महावीर'शब्दगर्भित काव्य-नामक कृतिओ पण रची छे जे अमने प्राप्त थइ छे। ते निकट समयमां प्रकाशित थशे।

प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रतनी नकल अमने आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा थी प्राप्त थइ छे।

साधुरत्नकृताः

'वीतराग'शब्दस्य षष्टिरर्थाः

॥६०॥ अम्ब! त्र्यम्बकभाललालितसुधाधाम क्रमं ते किम-
प्यन्तश्चिन्तितवान् व्यपोहितमहामोहप्ररोहं महः।
तस्मादस्मितमस्मि विस्मयकरव्याहारसारैर्गिरा-
मुद्गारैः कवयन्नयं सविनयं व.........श्री गुरून् ॥१॥ [शार्दूल०]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवीतराग[१]वरशासनसार्वभौम![२] , कुर्वीत राग[३]तरुतर्हणसार्वभौम![४] ।
पूर्वीतरागम![५] नवं भवतोऽभिधेयै, स्तैर्वीतरागरवसम्भविभिर्विधेयः[यम्]
॥२॥ [वसन्त०]

तन्वीत राग[६]रजनीकरराहुकल्प !, नौ[र्वीतराग]मिव मां भववारिराशौ ।
धून्वीत राग[७]रजमेष भवान् समीर-वद् वीतराग[८]विसरोरुशिरोऽग्रहीरः ॥३॥

मन्वीत राग[९]शमकं जनकं जनोऽयं, वन्वीत राग[१०]रहितः स्वहितं ततस्त्वाम् ।
चिन्वीत राग[११]मनिशं त्व....... हेतो-र्मिन्वीत राग[१२]मत एव मनो मदीयम् ॥४॥

स्तृण्वीत राग[१३]मभितो मतिनां महस्ते, वृण्वीत राग[१४]रचनामुचितं वचस्ते ।
कृण्वीत राग[१५]ममृतांशुरुचो यतस्ते, घृण्वीत राग[१६]रुचिमुक्(ग्) भुवने
भवांस्त[त्] ॥५॥

तृण्वीत राग[१७]वनभङ्गमरुत्तरङ्ग !, गौ[१८]र्वीतराग[१९] ! तव संशयमिट्तृणानि ।
गुर्वीतरागमिव[२०] मां निजदर्शनोत्क-मृण्वीत राग[२१]निकरेण भवान् नतस्तत् ॥६॥

सिन्वीत रागः परिपंथिनं मे, शिन्वीत रागन्म-[२२]सां महीं च ।
सुन्वीत रागः[२३] श्रितपन्नखे यः, सन्वीत राग[२४]र्जितमूर्जितात् ते ॥७॥ [इन्द्र०]

लल्वीत राग[२५]र्जितुलां मदीया, वेवीत राग[२६]ध्रुवमाधुरीं च ।
वावीत राग[२७]च्छितिमात्मनो यद्, वावीत[२८] रागर्ह्यगुरो[२९]..........नः ॥८॥ [उपेन्द्र०]

भुवीतरागं जित ! तात् पि वाद, भुवीतरागः परभागयोगात्[३०] ।
[३१]ब्रुवीत रागद्रविता[३२] तथा गां, स्तुवीत रागस्तु न को भवन्तम् ? ॥९॥

ह्रुवीत रागप्रथिमानमभ्रं, सुवीत रागल्भ्यविभान्तद...... (?) ।
स वीतरागं भवतः प्रतापो-ऽश्नुवीत रागं जलधिं समिद्धः ॥१०॥

वावीत[३२]रागप्रवरान्तरीपो-पवीतरागस्थवरान्तरीपाः (?) ।
स[३३] वीतरागस्थवरावभास-सद्वीतरागस्थवरान्तरीपाः ॥११॥

प्रमोदमुद्योतितवीतरागः, द्वीपाधिपाम्भोनिधिवीतरागः ।
गुरोर्गुणौघः श्रितवीतरागः, वराम्बुधीरेऽसति वीतरागः[३४] ॥१२॥

वरावभासादिगवीतराग, वार्द्ध्यन्तरीपाच्युपवीतरागम् ।
...... न् चमत्कार्यपवीतरागः[३५], यद्वः प्रियात्संवरवीतरागः ॥१३॥
त्रिभिर्विशेषकम् ॥ [उपजाति]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मावीत[३६]रागं[३७] भवसम्भवं भो, मावीत[३८] रागं यशसां[३९] च यूयम्।
मावीत[४०] रागं मनसाऽत्र येन, वेवीत रागं[४१] पुरतो गु-णाम् ॥१४॥

वेवीत रागप्रमुखानि यूयं, वेवीत राग[४२]द्युतितां वसूनि[४३]।
संवीतरागस्य[४४] गुरोर्नखालीं, वावीत[४५] रागत्व[४६]महो ! विहाय ॥१५॥ [इन्द्र०]

देवीतरा[ग]द्रुमवज्जनानां, यद् व्यञ्जनं व्यञ्जितवीतरागः।
श्रीवीतरागश्रितधर्मकर्म, वाग्वीतरागं जय साधुरत्न[४७] ! ॥१६॥ [इन्द्र०]

॥ इति वीतरागशब्दस्य षष्टिरर्थाः समर्थिताः ॥

टी. १. जिनः, २. चक्री, ३. अनुरागः, ४. गजः, ५. हे पूर्वी-पूर्वधरः, तदितरो(र) आगमो यस्य, ६. वचनीयता, ७. दुर्णयः, ८. उपशांतगुणस्थानस्था०, ९. मत्सर, १०. अविद्या, ११. हर्ष, १२. द्वेष, १३. अभिनिवेशः, १४. गान्धारादयोरागा(:), १५. श्वेतवर्णः, १६. विषयाभिलाषः, १७. हे कामवृक्ष!, १८. धेनुः(?), १९. हेगतदृष्टिराग, २०. पुत्रमिव, २१. राजानः, २२. रोऽनिः तद्धे(?), २३. रक्तवर्णः, २४. इत्यं(त्थं), २५. ध्वनयः, २६. श्रीरागः, २७. वशाषशब्दः(?), २८. वेग् तन्तुसन्ताने, २९. नराऽगह्य(र्ह्य)श्वाऽसौगुरुश्च, ३०. अनः(न)परागः प्राप्तख्यातिः, ३१. तथेव रागद्रवितां–चन्दनद्रविताम्, ३२. गत्यर्थः, ३३. एते सर्वेऽपि द्वीपसमुद्रा एव, ३४. र-कारं विना वीतरागः, ३५. इन्द्रः, ३६. इंक् स्मरणे, ३७. स्वाद, ३८. इण् ज्ञाने, ३९. प्राप्तिम्, ४०. वींक्, ४१. रात्रिरागः, ते लुग्वा० इति, रात्रिपदलोपः, ४२. रज्जु-सूर्य, ४३. रत्नानि, ४४. अङ्गरागः, ते लुग् वा०[३/२/१०८] इति पद लोपः, ४५. सेवा, ४६. हरिद्रारागत्वम्, ४७.......सम्बोधने।

श्रीसाधुरत्नसूरिकृतम्-अनेकार्थशब्दमयं काव्यद्वयम्

महा महा महाऽमायाः, सभा सभा सभाजनाः।
या माऽमा भाभती तेहाः, सदाऽसयोऽसयोऽशयः ॥१॥

महाऽवीरो महाऽवीरो, सन्महावीरकान्तकः।
महावीरो महावीरो, महावीराङ्कितो जिनः ॥२॥

For Private and Personal Use Only

अनेकार्थशब्दगर्भित कृति सूचि

क्रम	शब्द	अर्थ	पद्यसं.	कृतिनाम	कर्त्ता	प्रकाशन
1	ऋषभ	-	-	जिनस्तव	-	हस्त. विद्वद्वर्य पूज्य मुनिश्री धुरंधरवि.म.
2	कमल	५१२	२३०	पंचजिनस्तोत्र	हर्षकुलगणि	अनु.१५
3	कमल	११६	२९	चतुर्विंशति-जिनस्तोत्र	सोमविमलसूरि	स्तुतितरंगिणी
4	कमल	१०८	२९	नेमिजिनेन्द्रस्तवन	हेमविजयगणि	*
5	गदबदडा+	-	-	गदबदडा-स्तोत्र सटीक		हस्त.श्रीहेम-चंद्राचार्य ज्ञान. पाटण)
6	गो	२४	८	सर्वजिनसाधारण-स्तोत्र	तेजसिंह (मुनि?)	अनु.७४
7	गो+	२४	?	जिनस्तुति	-	-
8	गो	१०	१	'गो'शब्दकाव्य-सटीक	अज्ञात	अनेकार्थरत्न-मंजूषा
9	चसिमा	१००	३२	'चसिमा' अर्थसहित स्वाध्याय (मा.गु.)	सोमविमलसूरि	अनु.७४
10	नवखण्ड	१५	८	नवखण्डपार्श्व-जिन-स्तवन	रत्नशेखरसूरि	जैनस्तोत्र-समु.
11	नवखण्ड+	-	-	नवखंडपार्श्वस्तोत्र	ज्ञानसागरसूरि	-
12	पराग	१०८	२८	साधारणजिनस्तव	लक्ष्मीकल्लोल-गणि	अनेकार्थरत्न-मंजूषा
13	पावन	१०८	२९	नेमिनाथस्तवन	अज्ञात	संपादन चालु
14	पुण्डरीक	१००	२७	जिनस्तव(?)	सर्वविजय उपा०	अनु.७०
15	मंगल+	२४	-	महावीरस्तोत्रम्	मुनिसुंदरसूरि	जैनस्तोत्र-संदोह भा-२
16	महावीर	१२८+ १६	३५+ ४	समवसरणस्थित-चतुर्मुखमहावीर स्तव तथा स्तुति सटीक	वीरदेवमुनि	संपादन चालु
17	महावीर+	-	८	महावीरजिनस्तोत्र-सटीक	-	अनेकार्थरत्न मंजूषामां नोंध छे
18	वीतराग	६०	१६	वीतरागशब्दस्य षष्टिरर्थाः	साधुरत्न	*

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

19	शर्म+	-	११	जीराउलापार्श्वनाथ-स्तोत्र	अज्ञात	जैनस्तोत्र-संदोह भा.२
20	संवर	१०८	२८	अभिनंदनजिन-स्तोत्र-सावचूरि	सोमविमलसूरि	अनु.५६
21	सकला+	-	-	पार्श्वस्तोत्र-लघु,बृहद् सटीक	परिशिक्षित-सुन्दर(?)	हस्त०सेवा-मंदिर-रावटी
22	सरस्वती	१०८	२९	युगादिजिनस्तवन	जिनमाणिक्य (?)	जैनस्तोत्र-समुच्चय
23	सारंग/हरि	६४/६४	१८	जिनस्तवन	हीरविजय-शिष्य	अनु.७४
24	सारंग	६०	१९	महावीरजिनस्तव	गुणविजय	अनेकार्थरत्न-मंजूषा
25	सारंग	४०	११	शंखेश्वरपार्श्वस्तव	नयविमल उपा०	*
26	सारंग	३६	७	पार्श्वजिनस्तोत्र	रामविजय	*
27	सारंग	२०	८	विमलनाथस्तवन (मा.गु.)	शुभवीर	स्तवनसंग्रह
28	सारंग	१६	४	ऋषभस्तुति	अज्ञात	अनेकार्थरत्न-मंजूषा
29	हरि	४४	१३	अजितजिनस्तवन	नयविमलउपा०	*
30	हरि	३२	६	आनन्दविज्ञप्ति (श्लो.४१-४८)	अज्ञात	अनु०
31	हरि	३२	८	कमलविजय-गुरुस्तोत्र	उदयविजय	*
32	हरि	३०	१०	वीतरागस्तव	विवेकसागर	अनेकार्थरत्न-मंजूषा
33	हरि	१६	९	स्थंभनपार्श्वनाथस्तोत्र	नयचन्द्रसूरि	जैनस्तोत्र-समुच्चय
34	हरि+	-	१	हरिशब्दगुंफित-श्लोक अनेकार्थगर्भित	अज्ञात	हस्तप्रत-आ.कैलास-सागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा

नोट : + आ निशानीवाली कृतिओ जोवामां आवी नथी, ते प्राप्त थाय तो वधु परिचय मली शके।

* निशानीवाळी कृतिओ 'श्रुतसागर' अंकमां प्रकाशित करवामां आवी छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनि हंस रचित

दीपावलीपर्व सज्झाय

डॉ.शीतल शाह

आसन्न उपकारी, शासनपति भगवान महावीरना निर्वाण प्रसंगथी आसो वद अमासनी काळी रात पण दीवाळी जेवा पवित्र पर्वपणाने पामी तेवा प्रभु सदाय जयवंत वर्तो। प्रभु निमित्ते प्रवर्तेल पर्व दीवाळी आजे भारतभरमां खूब ज धामधूमथी उजवाय छे। आ पर्वने लईने दरेक घरोमां अगाउथी ज साफ-सफाई, विविध पक्कान्नादि थवा लागे छे। आ परिस्थितिमां आध्यात्मिक दीपावलीनी उजवणी केवी रीते करवी ते कळा सीखवती एक प्रायः अप्रकाशित कृतिनुं अत्रे प्रकाशन करवामां आवी रह्युं छे।

आ कृतिना प्रकारनुं नाम "गीत", "स्तवन" अने "सज्झाय" आम विविध पाठभेदो धरावती विविध हस्तप्रतोमां अलग अलग रीते मळे छे। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर स्थित वि.सं. १९२६नी एक प्रत क्र. १२६०९५मां सज्झाय शब्द वापर्यो छे। प्रत क्र. ४२४६९मां स्तवन अने प्रत क्र. ४८०८१मां गीत शब्द वापर्यो छे। कृति उपदेशपरक विशेष जणातां अमे आमांथी सज्झाय प्रकारने प्रधानता आपी छे। अत्रे प्रकाशित करेल कृति बे भिन्न-भिन्न प्रतोमां थोडाक फेरफार साथे मळे छे। जेमां पाठभेद साथे आंकणी अने गाथा संख्यानो पण तफावत आवे छे। एकमां सात तो बीजीमां बार गाथाओ छे। आ स्थितिमां अमे पाठांतर न आपतां बन्ने प्रतोनो संपूर्ण पाठ ज प्रस्तुत लेखमां मूकी दीधेल छे। आमां प्रत क्र. ४८०८१मां गाथा ७ छे अने पाठ कंईक व्यवस्थित जणातो होवाथी प्रथम क्रमांक पर राखेल छे अने त्यारबाद प्रत क्र.४२४६९ के जेमां गाथा १२ अने पाठ थोडो अशुद्ध जणाय छे तेने द्वितीय क्रमे राखेल छे। ध्यानथी जोता एम मानवानुं कारण मळे छे के कर्ताए पोते ज प्रथम लघु रचना करी पाछळथी एनी मोटी आवृत्ति बनावी छे. एटले एम संबद्ध छे, छतां पण स्वतंत्र कही शकाय। कोबामां अन्य पण एक प्रत क्र. १२६०९५ छे। जेमां पाठ उपरोक्त बन्ने प्रतो करतां शुद्ध जणाय छे। प्रत जीर्ण अने खंडित होवा छतां शक्य पाठांशने फूटनोटमां उतारेल छे।

आ प्रतमां प्रथम कृतिनी जेम ७ गाथा छे, छतां केटलोक पाठांश बीजी कृति साथे पण मळे छे, तेनो पाठांश ते कृतिनी फूटनोटमां नोंधेल छे. त्रीजी प्रतमां क्यांक हिन्दी शब्दप्रयोग पण जोवा मळे छे।

कृति परिचयः-

कृति परिचय माटे आम तो कृति नाम ज पर्याप्त छे। दीवाळी पर्व आवतां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घरमां कराती तैयारीना स्थाने घटमां करवानी तैयारी दर्शावी आध्यात्मिक दीपावली मनाववानो संदेश आ कृतिमां कर्ताए आप्यो छे।

जेम सर्व तीर्थोमां शत्रुंजयतीर्थ मोटुं छे तेम कर्ताए सर्व पर्वमां दीवाळी पर्वने मोटुं पर्व कह्युं छे अने तेने आत्मगुणो वडे करीने आध्यात्मिक रीतथी उजववानी वात जणावी छे। समकित वडे आत्मानुं लिंपण करवुं, शील वडे देहने धोळवो, ज्ञान-विज्ञान वडे आत्माने चितरवो, उपशम जलथी स्नान, छट्ठ, पोसह, सोल प्रहर दीवा करी मोक्षद्वार उद्घाटननी वात करी छे। नवतत्त्व अने नवकाररूपी मोदक, सेव, सुखडी वगेरे तथा बार व्रत ते उत्तम दाळभातघीनुं जमण नित्य जे करे छे, सुगुरु वचननुं सालणु, सत्यवचननुं तंबोल करीने जे रहे छे तेने घेर नित्य दीवाळी थाय छे तेम कर्ता नोंधे छे।

द्वितीय क्रमे रहेल कृतिपाठमां विशेष ए छे के प्रभुना निर्वाण बाद प्रभुनी बहेने भाई नंदीवर्धनने पोताना घेर जमवा माटे बोलाव्या हता। तेनुं वर्णन खूब सरस रीते करेल छे। बहेन भाईने सेव, सुंवाळी, लापसी घीथी भरपुर सालिदाल सुगंधी मुखवास आदि जमाडीने भाईनो शोक दूर करे छे अने भाई पण बहेनने पहेरण पटोळा नवरंगी ओढणीओ, मोतीनो हार आदि उपहार आपे छे।

अंतमां दीवाळी पर्वनी आराधना तथा फळनुं वर्णन करता कर्ता कहे छे के जे आ पर्वनी आराधना करे तेने नव निधान उत्पन्न थाय छे। अने आ संसाररूपी सागरथी पार पामे छे।

द्वितीय क्रमे रहेल कृतिमां प्रतिलेखक द्वारा गाथा क्रमांक ४ आपवो रही गयेल जेने अमे सुधारेल छे। आंकणीमां आवता कल्याण शब्द पछी समाप्तिसूचक कोई संकेत आपेल न हतो तेने अमे योग्य रीते मूकेल छे। द्वितीय कृतिमां क्यांक क्यांक अशुद्धि साथे प्रास मेळ अने छंद मेळ माटे पण संशोधन मागी ले तेम छे (यथा गाथा नं-९मां छंद मात्रा मेळ नथी बेसतो।) कृतिना रचना स्थल के वर्षादिनो उल्लेख उपलब्ध नथी।

कर्ता परिचयः-

प्रथम क्रमे रहेल कृतिमां कर्ता माटे 'इम कहइ सुंदर हंस' नोंधेल छे अने द्वितीय क्रमे रहेल कृतिमां 'कर जोडी भणी हंसराय' पाठ मळे छे। आना परथी कर्ता नाम सुंदरहंस, हंसराज के मुनि हंस होवानुं अनुमान थाय छे। सुंदर ए कर्ताना गुरुनुं नाम पण संभवी शके छे. कृतिमां कर्ता विषे अन्य कोइ विगत प्राप्त थती नथी।

प्रत परिचयः-

प्रथम क्रमे रहेल कृति माटे प्रत क्र. ४८०८१ अने द्वितीय क्रमे रहेल कृति माटे प्रत क्र.-४२४६९नो उपयोग करेल छे। बन्नेय प्रतो आचार्य श्री कैलाससागरसूरि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानमंदिर, कोबानी छे। तेमांथी प्रथम प्रत वि.सं. १९वी अनुमानित छे अने बीजी वि.सं.२०वी अनुमानित जणाय छे। बन्ने य प्रतोमां प्रतिलेखन पुष्पिका न होवाथी लेखन स्थळ के लहिया वगेरेनी माहिती प्राप्त थती नथी।

दीपावलीपर्व सज्झाय

प्रथम कृति - सकल तीरथमांहि जिम वडूं, शेत्रुंज तीरथ धाम।
परब दीवाली तिम वडूं, कोडि सिरि तसु नाम ॥१॥

दीवाली आवी भलइ, ते दिन धिन सुविहाण।
वीरइं सिवसुख पांमीया गोयम केवलनाण ॥१॥ दीवाली[१]... आंचली ॥

समकित लीपुं आतमा[२] धुलु शीलिइं देह।
ज्ञान विज्ञाने चीतरुं, निघट घट कर एह ॥२॥ दीवाली...

उपसम जल नाही[३] करु[४], नरनारी ए सिणगार।
छठ करुं पोसह उचरु, जिम लहु सुख अपार ॥३॥ दीवाली...

सोल पुहर दीवा करु, उघाडिउ मोक्ष दूआर।
गुण गाउ गुरुदेवतणा, सफल करु संसार ॥४॥ दीवाली...

मोदक सेव सूहाडी, नवतत्वनइं नवकार।
जीवदया भीनांवडी(?), भोजन करुअ तिवार ॥५॥ दीवाली...

बारइ व्रत तुम्हे आदरु, सालिदालि घृत घोल।
सुगुरु वचन सुणि सालणां, सत्यवचन तंबोल ॥६॥ दीवाली...

जे जन पूजइ गुरु नमइ, ते उजूआलइ वंस।
तेह घरि नितु दीवालडी, इम कहइ सुंदर हंस ॥७॥ दीवाली...

॥ इति गीतं ॥

द्वितीय कृति - सकल तीरथमां जीन[५] वडो साधुजी तीरथ जाय।
परव दीवाली तम वडी, कोडे चरित्र सुमान ॥१॥

कल्याणक दीन आवीयो, सो दन दन सुदीवान।
विरं ते सर्व सुखसंपदा, गौतम केवलज्ञान ॥२॥ कल्याण...

---

१. दिवाली को परब आवियो, २. समकिते लेपोने आत्मा, ४. नाइ, ४. करी, ५. जन०,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपसम जल न(ना)हि करो, नरनारी करो रे शणगार,
साधु रिखीत सर्वे वंदना, उतरवुं भव पार ॥३॥ कल्याण...
समकीत लेपोने आत्मा, शीयल धोलो देश,
नान ज्ञान करी चींतवो, समत गुपत धरी वेल[६] ॥४॥ कल्याण...
छठ्ठ करोने पोसा उचरो, उगाडो मोक्षद्वार।
सोलपहोरना पोसा करो, जीम पामे भवपार[७] ॥५॥ कल्याण...
सजाते कालना पडीकमणा, मेरइया सुरी चार,
तपो ते जप करी चींतजो, वंदण करो रे जवार... ॥६॥ कल्याण...
बेनी ते बंधव नुतर्यो, बंधव मत कर्यो रीस,
आज अमारा घेर जमजो, नकर हससे लोक.... ॥७॥ कल्याण...
सेव सुवालीने लापसी, सारदाल ग्रथपुर[८],
क्षेमा रुपीनां करो सारणां, तस वचन तंबोल.... ॥८॥ कल्याण...
पहेरण पीत पटोरडां ओढण नवरंग गाढ,
लीला ते जगथी लाइने कांचली, जग मोतीनो रे हार... ॥९॥ कल्याण...
बंधवे बेनी शणगारीयां तस कारण भइ बेन,
दीवाली दीव वडी, मांडवडी अखातीज,
होलीनां पावन पेबडा, तस कारण भाइबीज... ॥१०॥ कल्याण...
असुर[९] दीवाली जे करे, ते घरे नवनीधान[१०],
विचरे ते सर्वे सुखसंपदा, कर जोडी भणी हंसराय... ॥११॥ कल्याण...
काल परोला परवेयया, सवु संघ करो रे जवार,
देव झार्याने साधु वांदीया, उतरवुं भवपार...... ॥१२॥ कल्याण...

इति दीवाली स्तवन

❋ ♦ ❋

---

६. गाथा ४-.... कमणा, मेराया शुभ ध्यान। तप तेलना करी सिंचणा, खामणे करो जुहा(र)..., ७. पामो भवनो पार, ८. सेव सूंहालि समकित लापसी, पचखांण कुरकपूर। आ गाथा क्रमांक ३ पर छे, ९. असुर-प्रत ४२४६९, एसी रे-प्रत १२६०९५, १०. ते घर नवनीध होय। ते घर...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजरत्न रचित

ज्ञानपंचमीपर्व सज्झाय

गजेन्द्र शाह

जगतना समस्त पदार्थोमां ज्ञान सर्वोपरि छे। ज्ञान मात्र मुक्ति माटे ज जरूरी छे तेवुं नथी। संसारमां पण ते विना सुखनो भोगवटो शक्य नथी। तमाम भौतिक सुख-सामग्री होय पण ज्ञानावरणीयना उदये जीव अंध, मूक, पागल थइ जाय के कॉमामां जतो रहेल होय तो ते तमाम सुविधानो प्रायः कोई ज अर्थ रहेतो नथी। ज्ञान जगतना तमाम जीवोनी ओळख छे। जेमां अंशमात्र ज्ञान नथी ते जीव नहीं पण अजीवनी व्याख्यामां आवी जाय छे। शास्त्रोमां कह्युं छे के **अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडिओ** जीवमां अक्षरनो अनंतमो भाग नित्य उघाडो रहे छे। सूक्ष्म निगोदमां रहेला जीवोमां पण भले अक्षरनो अनंतमो भाग खुल्लो होय पण एटलुं ज्ञान तो खरुं ज। सुविशुद्ध ज्ञाननी आराधनाना प्रभावे जीव क्रमशः पोतानामां रहेल ज्ञानने प्रगट करतो जाय छे अने ज्यारे ते संपूर्ण ज्ञान केवळज्ञानने प्रगट करी दे छे त्यारे ते संसारना तमाम कष्टोने कापीने शाश्वत मुक्तिसुखनो भोक्ता बने छे। एवा पवित्र ज्ञाननी आराधनामां वाचकने लयलीन करती प्रायः अप्रगट कृतिनुं अहीं प्रकाशन करवामां आवे छे।

कृति परिचय- शारदा माता तथा सद्गुरुनुं स्मरण करीने कृतिनो प्रारंभ करायो छे। मारुगुर्जर भाषामां सुंदर गेय पद्यबद्ध सरळताथी लोकभोग्य बनी जाय तेवी रचना छे। प्रतिक्रमणमां सामान्य दिवसे के विशेष पंचमीना दिवसे सज्झायना स्थाने उपयोगमां लेवी, गायक अने श्रोता बन्नेने ज्ञानाराधनामां तरबोळ करी दे एवी रचना छे। कृतिनो विषय, शब्दो, वाक्यो अने आंचली आराधक जीवमां उत्साहनो नवो संचार करे तेवा छे। आंचलीमां वारंवार गवाती कडी- **'सोभागी पंचमी कीजीए, वालेसर पंचमी कीजीए, गुणवंता पंचमी कीजीए'** वगेरे द्वारा कर्ताए पंचमीनी आराधना माटे वाचकने भारपूर्वक प्रेरणा करी छे।

ज्ञानपंचमीनी महत्ता दर्शावतां कर्ताए कृतिमां ६ उपमा आपी छे, यथा- जिनमूर्ति विना जेम जिनभवन न शोभे, पुरुष विना जेम नारी, लवण विना भोजन, पासा विना बाजी, दान विना समृद्धि, नेत्र विना मुख नथी शोभतुं तेम ज्ञानविना मनुष्य पण नथी शोभतो। एटलुं ज नहीं पण ते ज्ञान विना दीन छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञाननी महत्ता दर्शावतां कर्ताए महानिशीथसूत्रनो संदर्भ टांक्यो छे। महत्ता दर्शावी आगळ आराधना विधि बतावतां कह्यु के पांचमना पूर्व दिवसे अने पछीना दिवसे एकवार भोजन अने पांचमनो उपवास करवो। अहीं उपवासनी शास्त्रीय साची रीत परंपरानी स्पष्टता थाय छे। कोई पण उपवास करो तेनो नियम छे के आगळ-पाछळ एकासणुं करवुं। एटले ज उपवासना पच्चक्खाणमां **चउत्थं भत्तं** पाठ बोलाय छे। चार भक्तनो त्याग ते आ रीते करवानो छे। एक वात याद राखवी के आहारनी प्राचीन प्रणाली बे टाइम भोजननी ज छे। आयुर्वेद पण आज वातनी पुष्टि आपे छे-

वामशायी द्विर्भुञ्जानो, षण्मुत्रि द्विपुरिषकः।
व्यायामी ब्रह्मचारी च, शतं वर्षाणि जीवती॥

अर्थ-वामकुक्षी शयन, बे समय भोजन, दिवसमां ६ वार लघुशंका, २ वार वडीशंका, व्यायाम अने ब्रह्मचर्य पालन करनार व्यक्ति १०० वर्ष जीवे छे।

अन्तरा प्रातरासं च सायमासं तथैव च।
सदोपवासी स भवेद्यो न भुङ्क्तेऽन्तरा पुनः॥

अर्थ-जे व्यक्ति सवार-सांजना बे समयना भोजननी वच्चे कंइ पण खातो नथी ते सदा उपवासी छे। अर्थात् तेने उपवास करवाथी जे स्वास्थ्यलाभ प्राप्त थाय छे ते आनाथी थाय।

प्राचीन समयमां प्रायः सर्वत्र बे समय भोजननी ज प्रणाली हती। एटले ज उपवासना दिवसना बे टाइम अने आगळ-पाछळना एक-एक टाइम आहारनो त्याग करतां चार टाइम आहारनो त्याग थाय त्यारे ज **चउत्थं भत्तं** पाठ सार्थक बने। वर्तमानमां टी टाइम साथे एक ज दिवसमां चार-चार वार खावानुं, उपवासना पूर्व दिवसे सांजे भरपेट अत्तरवायणा अने पारणाना दिवसे छुट्टा मोढे आहार लेवातो होय तो ते शास्त्रीय परंपरा नथी। कर्ताए पूर्व-पछीना दिवसे एक समय भोजननो उल्लेख करीने उपवासनी सही रीतनो संकेत आप्यो छे। कर्तानी एक वात विचारणीय ए छे के पंचमी तपनो प्रारंभ ज्ञानपंचमीने बदले पर्युषणथी करवानुं जणाव्युं ते संदिग्ध छे। आ रहस्योद्घाटन विद्वानो करे ते अपेक्षित छे। अंते तपना उजमणानी वात, वरदत्त-गुणमंजरीना उदाहरण साथे तपनुं फळ, रचना समय अने कळशमां पोतानो परिचय आपी कृति पूर्ण करवामां आवी छे। कृतिनो रचना समय वि.सं. १६८५ चैत्र सुद पूर्णिमा रविवार छे।

कर्ता परिचय-

प्रस्तुत कृतिना कर्ता तपागच्छीय आचार्य विमलसोमसूरिनी परंपराना विद्वान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजरत्न मुनि छे। विमलसोमसूरिनुं नाम ते समयना तपगच्छाधिपति तरीके दर्शाव्युं छे। ते तेमना गुरु पण छे के केम ते संशोधनीय छे। प्रतना लेखनना प्रारंभे मंगल स्मरण तरीके प्रतिलेखक द्वारा करायेल उल्लेख अनुसार राजरत्नजी उपाध्याय पदने वरेला होय तेम जणाय छे। ते सिवाय कर्ता विषे विशेष कोई उल्लेख प्राप्त थतो नथी।

प्रत परिचय-

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबानी एक मात्र प्रत क्र. ४८०४८ना आधारे करायुं छे। प्रतना एक पानामां ११ जेटली पंक्तिओ अने एक पंक्तिमां ४२ जेटला अक्षरो छे। प्रतनी मध्ये वापीयुक्त फुल्लिका, गोळ चंद्रक, अंक अने दंड लाल स्याहीथी युक्त छे। अक्षर सुंदर अने सुवाच्य छे। मात्र एक ज पानानी प्रत छे। तेमां मात्र आ एक ज कृतिनुं लेखन थयेल छे। प्रतना प्रारंभे प्रतिलेखक द्वारा मंगलाचरणरूपे **महोपाध्याय श्री५ श्री राजरत्न गणि गुरुभ्यो नमः** ना उल्लेखना आधारे प्रतनुं लेखन कर्ताना ज कोई शिष्य द्वारा थयुं होय तेम जणाय छे। लेखन रचनाना समीपवर्ती समयनुं होवाथी पाठशुद्धि होवी स्वाभाविक छे। लेखन स्थळ के लेखक विषे अन्य कोई माहिती उपलब्ध नथी।

ज्ञानपंचमीपर्व सज्झाय

॥ऍ०॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ महोपाध्याय श्री५ श्री राजरत्न गणि गुरुभ्यो नमः ॥

॥ राग गुडी ॥

सारदमाता चरण नमीनइं, लही सदगुरु सुपसाय।
ज्ञानपं(च)मी तप महिमा पभणुं, जिम हुइ निरमल काय ॥१॥

सोभागी पंचमी कीजीइयूं (ये)। वाहलेसर पं०। गुणवंता पं०।
जेहथी अविचल वास। गावइ सुरवधू रास।
पुहचइ वंछित आस। दिन दिन अधिक विलास। सो०। आंचली।

पंचमी तपथी ज्ञान लहीजइ, हुइ जयजयकार।
त्रिभोवनमाहि ज्ञान मनोहर, ज्ञानइ अरथभंडार ॥२॥ सो०...

दशवीकालिकसूत्र प्रमुखमांहि, वीरवचन मनि आंणि।
ज्ञान वडुं महीमंडलि कहीइ, पंचमी तपथी जाणि ॥३॥ सो०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनमूरति विण भुवन न शोभइ, पुरुष विहूणी नारि।
लवण विहुंणु भोजन जेहवुं, पासा विहुंणी सारि ॥४॥ सो०...
दान विना जिम विविध परिग्रह, मुख जिम नेत्र विहीन।
ए जगमांहि जे नरनारी, ज्ञानविना तिम दीन ॥५॥ सो०...
महानिशीथ आगममांहि पांचमी, तपफल भाखियउं जेह।
चतुर पुरुष मनमांहि विचारी, मनशुद्धइं करु तेह ॥६॥ सो०...
परव पजूसणथी आरंभी, पांसठि मास उदार।
विधि पूरव जे ए तप करस्यइ, ते लहइ भवोदधि पार ॥७॥ सो०...
चुथि छट्ठइ भोजन एक वारह, पाचमी पाणाहार।
पौषधव्रत सच्चित परिहारी, भूमिशयन व्रतधार ॥८॥ सो०...
नमो नाणस्स जाप मनि धरउ, करउ ए विधि सार।
सकल सोभाग लहइ सुख संपति, कीरति रिद्धि विस्तार ॥९॥ सो०...
पूरइ तपि ऊजमणुं करवुं, पंच पंच प्रकार।
पाठां परति फलादिक ठवणी, नवकरवाली अपार ॥१०॥ सो०...
ज्ञानभगति करवी जिनपूजा, संघभगति अभिरांम।
एणी परि जे जन ए विधि करस्यइ, ते लहइ चिंतित काम ॥११॥ सो०...
ए तपथी गुणमंजरी कुमरी, वरदत्त नामि कुमार।
ते बिहुंनां मनवंछित फलीयां, परभवि सुख मनोहार ॥१२॥ सो०...
संवत सोलपंच्यासीआ वरसि, चैत्र मासि रविवार।
पुंनिमि दिन कहि राजरत्न मुनि, पांचमी तप सुविचार ॥१३॥ सो०...

अथ कलश

इम नाण पंचमी तणु महिमा, सुगुण जाणी आदरु।
बहु ज्ञान पांमी सुख कामी, मुगति नारीनइ वरु॥
तपगच्छि गणधर सूरि सुंदर, विमलसोमसूरीसरो।
राजरत्न मुनिवर हरखि पभणइ, सयल संघ शिवंकरो ॥१४॥

॥ इति श्री ज्ञानपंचमी सज्झाय संपूर्णाः ॥ श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः ॥श्री॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश

मुनिश्री पुण्यविजयजी

(गतांक से जारी...)

आ चार अनुयोग पैकी मात्र एक धर्मकथानुयोग ज एवो छे जे आमजनता सुधी पहोंची शके छे अने तेथी ज बीजा अनुयोगो करतां कोई अपेक्षाए तेनुं महत्त्व समजवानुं छे। जैन परंपरा अने वैदिक परंपरानी पेठे बौद्ध परंपराए पण कथानुयोगने स्थान आपेलुं छे एटलुं ज नहि, पण सरखामणीमां वैदिक परंपरा करतां बौद्ध परंपरा, जैन परंपरानी पेठे, आम जनतानी सविशेष प्रतिनिधि रहेली छे।

जैन परंपराना चरणकरणानुयोग माटे बौद्ध परंपरामां "विनयपिटक" शब्द, धर्म कथानुयोग माटे "सुत्तपिटक" अने गणितानुयोग तथा द्रव्यानुयोग माटे "अभिधम्म पिटक शब्द योजायो छे। "पिटक" शब्द जैन परंपराना "द्वादशांगीगणिपिटक" साथे जोडायेला "पिटक" शब्दने मळतो "पेटी" अर्थने बतावतो ज शब्द छे। सुत्तपिटकमां अनेकानेक कथाओनो समावेश छे। दीघनिकाय, मज्झमनिकाय, सुत्तनिपात वगेरे अनेकानेक ग्रंथोनो "सुत्तपिटक" मां समावेश थाय छे।

जैन परंपरानो धर्मकथानुयोग, बौद्ध परंपरानो सुत्तपिटक अने वैदिक परंपरानो इतिहास ए त्रणे शब्दो लगभग एकार्थक शब्दो छे। धर्मकथानुयोग, पथ्य भोजन-पान जेवो छे। जेम पथ्य अन्न-पान मानवशरीरने दृढ, नीरोगी, पुरुषार्थी, दीर्घजीवी अने मानवतापरायण बनावे छे, तेम धर्मकथानुयोग पण मानवना मनने प्रेरणा आपी बलिष्ठ, स्वस्थ, निग्रही, सदाचारी अने सदाचारप्रचारी बनावे छे अने अजरामर परिस्थिति सुधी पहोंचाडे छे।

बोलतां-चालतां, उपदेशक करतां धर्मकथानुयोग मानवना उपर एवी सारी असर उपजावे छे जे धीरे धीरे पण पाकी थयेली अने जीवनमां उतरेली होय छे। संक्षेपमां एम कही शकाय के धर्मकथानुयोग मानवने खरा अर्थमां मानवरूपे घडी शके छे अने आध्यात्मिक दृष्टिए पूर्ण स्वतंत्रता सुधी पहोंचाडे छे।

३. कथाना प्रकारो अने कथावस्तु–आचार्य श्री हरिभद्रसूरिवरे समराईच्चकहामां कथाओना विभाग करतां अर्थकथा, कामकथा, धर्मकथा अने संकीर्णकथा एम चार विभाग बताव्या छे। जे कथामां उपादानरूपे अर्थ होय, वणजवेपार, लडाई, खेती,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेख-लखत वगेरेनी पद्धतिओ, कळाओ, शिल्प, सुवर्णसिद्धि वगेरे धातुवादो तथा अर्थोपार्जनना निमित्तरूप साम, दंड आदि नीतिओनुं वर्णन होय तेनुं नाम अर्थकथा। जेमां उपादानरूपे काम होय अने प्रसंगे प्रसंगे दूतीना अभिसारो, स्त्रीओनां रमणो, अनंगलेखो, ललितकळाओ, अनुरागपुलकित निरूपेलां होय ते कामकथा। जेमां उपादानरूपे धर्म होय अने क्षमा, मार्दव, आर्जव, अलोभ, तप, संयम, सत्य, शौच वगेरेने लगतां मानवसमाजने धारण-पोषण आपनारां अने तेनुं सत्त्वसंरक्षण करनारां वर्णनो होय ते धर्म कथा। अने जेमां धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणे वर्गोनुं यथास्थान निरूपण होय अने ए त्रणे वर्गोने समजाववा तेम ज परस्पर अबाधक रीते व्यवहारमां लाववा युक्तिओ, तर्को, हेतुओ अने उदाहरण वगेरे आपेलां होय ते धर्मकथा।

कथाओना आ चार प्रकार पैकी केवळ एक धर्मकथा ज धर्मकथानुयोगमां आवे छे। मूळ जैन आगमोमां पण ज्ञाताधर्मकथांग, उपासकदशांग, अंतकृद्दशांग, अनुत्तरोपपातिकदशांग, विपाक वगेरे अनेक आगमो पण धर्मकथाने प्रधानपणे वर्णवे छे। ज्ञाताधर्मकथांगनुं जे प्राचीन कथासंख्या प्रमाण कहेवामां आव्युं छे तेमां ते आगममां साडा त्रण करोड कथाओ अने तेटली ज उपकथाओ वगेरे होवानुं कहेलुं छे। ए जोतां जैन परंपरामां धर्मकथानुं साहित्य केटलुं विपुल हतुं ए सहजमां ज कल्पी शकाय तेम छे।

धर्मकथाओमां पण युद्ध, खेती, वणज, कळाओ, शिल्प, ललितकळाओ, धातुवादो वगेरेनुं वर्णन आवे छे, परंतु धर्म प्रधान स्थाने होय अने बाकी बधुं आनुषंगिक रीते धर्मनुं पोषक होय। ए ज रीते अर्थकथा अने कामकथामां पण धर्मनुं वर्णन न ज आवे एम नहि, पण अर्थ अने काम एमां प्रधान होय; ए ज दृष्टिए ते ते कथाने तेवां तेवां नाम अपायेलां छे।

प्रस्तुत कथारत्नकोश धर्मकथाओनो महान ग्रंथ छे। तेमां उपर कह्या प्रमाणे अर्थकथा अने कामकथानुं प्रासंगिक निरूपण होवा छतां, धर्म प्रधान स्थाने होई तेने धर्मकथानो ग्रंथ गणवामां कशोय बाध नथी। आवी कथाओमां कथाओनी वस्तु दिव्य होय छे, मानव्य होय छे अने दिव्यमानव्य पण होय छे। कथारत्नकोशनी धर्मकथाओनी वस्तु प्रधानपणे मानव्य छे अने क्वचित् दिव्यमानव्य पण छे।

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी...)

3) सूचिकरण

पाण्डुलिपियों के रखरखाव के अंतर्गत सूचिकरण भी एक भाग है। (अंग्रेजी में) इसे डोक्युमेन्टेशन भी कहते हैं। कुछ विशेषज्ञ सूचिकरण को प्रिवेन्टीव कन्जर्वेशन का भाग नहीं मानते हैं। सूचिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे संग्रहित पाण्डुलिपियों की सूचनाएँ अगली पीढियों तक पहुँचाई जा सकती है। इसी कारण सूचिकरण का बहुत अधिक महत्त्व है। सूचीकरण के समय पर भी ध्यान पर आने वाली प्रतदशा आदि सूचनाओं को नोट करके रख लिया जाता है, ताकि आगे यथा समय प्रत को नवजीवन प्रदान किया जा सके. एकबार सही तरीके से जीर्ण प्रत का रेस्टोरेशन हो जाय तो उस प्रत का आयुष्य अगले १०० से ५०० वर्ष तक बढ जाता है उसे पढना सहज शक्य एवं सुगम हो जाता है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में सूचिकरण की प्रक्रिया स्वनिर्मित विशिष्ट प्रोग्राम के अन्तर्गत अत्यन्त विशाल पैमाने पर व विशिष्ट रूप से की जाती है। इसका विवरण तो अलग से किया जाना ही उचित होगा, किन्तु इसके महत्त्व के बारे में थोड़ी जानकारी जरूरी है।

सूचीकरण की सीमित अवधारणा को विकसित करने में तथा ग्रंथालय विज्ञान की प्रचलित प्रणालियों के स्थान पर महत्तम उपयोगिता व सूझबूझ का उपयोग करते हुए यहाँ के पंडितगण, प्रोग्रामर तथा कार्यकर्तागण सदैव कार्यरत हैं। हस्तलिखित ग्रंथों की सूक्ष्मतम सूचनाओं को तर्कबद्ध व बहूपयोगी तरीके से सूचीबद्ध करना एक बहुत ही जटिल कार्य है, लेकिन अपेक्षित ग्रंथ विद्वानों को सरलता से उपलब्ध हो सके, इसके लिए यहाँ एक बहूद्देशीय सूचिकरण प्रणाली के माध्यम से कम्प्युटर में संग्रह किया जाता है। वर्तमान समय में ग्रंथालय सेवा में कम्प्युटर का महत्त्व अति आवश्यक एवं उपयोगी सिद्ध हो रहा है। हस्तलिखित, मुद्रित ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं तथा उनमें समाविष्ट कृतियों की विस्तृत सूचनाएँ कम्प्युटराइज्ड की जा रही हैं।

इस प्रोग्राम के माध्यम से वाचकों की सुविधा हेतु पाण्डुलिपियों में पाई जानेवाली छोटी-बड़ी महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का संग्रह किया जा रहा है। जैसे किसी मूल कृति तथा उसके ऊपर रचित अन्य पुत्र कृतियों सहित सम्पूर्ण कृति परिवार की उपयोगी सूचनाएँ, जिसमें कृति का मूल नाम, उनकी सन्ततियाँ, उनका परस्पर एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूसरे के साथ सम्बन्ध, उनकी भाषा, स्वरूप, कर्त्ता, कर्त्ता की गुरु परम्परा, कृति का आदिवाक्य, अन्तिमवाक्य, कृति का परिमाण, तथा अन्य विशेष सूचनाओं का संग्रह किया जाता है। वह कृति कौन-कौन सी पुस्तकों, हस्तप्रतों अथवा अंकों में किस पृष्ठ पर उपलब्ध है, यदि कृति अपूर्ण है तो उसका कितना भाग हस्तप्रत अथवा पुस्तक में उपलब्ध है, इसकी सूचना भी दी जाती है।

इसके अतिरिक्त हस्तप्रतों में उपलब्ध कृतियों के विविध नाम, हस्तप्रत के प्रतिलेखक, जिसके पढने हेतु लिखी गई हो, उसकी सूचनाएँ, हस्तप्रत लिखवानेवालों की सूचनाएँ, हस्तप्रत का प्रतिलेखन वर्ष, जिस गाँव या शहर में हस्तप्रत लिखी गई हो उसकी सूचना, हस्तप्रत की भौतिक दशा, विशिष्ट लक्षण व अन्य विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है। कृति के कर्त्ता, पुस्तक के सम्पादक तथा हस्तप्रतों के प्रतिलेखकों का उसकी गुरु परम्परा के साथ उल्लेख किया जाता है, जिसके अन्तर्गत श्रमण एवं गृहस्थ विद्वानों की बहूपयोगी वंशावलियाँ तैयार की जाती हैं। ये सूचनाएँ कृति की रचना प्रशस्ति, हस्तप्रतों की प्रतिलेखन पुष्पिका, पुस्तकों के सम्पादक आदि की सूचनाओं से, गच्छों की पट्टावलियों से, विस्तृत वंशावलियों से तथा प्रतिमा व शिलालेखों से संकलित की जा रही हैं। इनमें साधु/गृहस्थ की वंश-परंपरा, उनके द्वारा की गई रचनाएँ, लिखी-लिखवाई गई हस्तप्रतें, की-करवाई गई प्रतिष्ठा-अंजनशलाका, बनवाए गए जिनमन्दिर, निकाले/निकलवाए गए संघ आदि की सूचनाएँ, उनका हुआ नगरों/गाँवों में विचरण-निवास, उनका पारस्परिक सम्बन्ध, तत्कालीन राजा-मन्त्री की सूचनाएँ इत्यादि का समावेश होता है ।

प्रोग्राम में संकलित सूचनाओं के आधार पर अद्यावधि अप्रकाशित जैन साहित्य का सूचीपत्र बनाकर विद्वानों के संशोधन तथा संपादन कार्य में महत्त्वपूर्ण सहयोग किया जा रहा है। विद्वत्समाज को अमूल्य ग्रन्थों की दुर्लभ सूचनाओं की जानकारी दी जा रही है। इस सूचीपत्र में बहुत सारी ऐसी कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है, जिसके अस्तित्व के विषय में विद्वानों को आज तक जानकारी नहीं है। इन कारणों से सूचिकरण का यह कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है।

प्राचीन पाण्डुलिपि संरक्षण विधि को मैंने यथामति संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आशा है कि इससे वाचकवर्ग को विशेष जानकारियाँ प्राप्त होंगी। इन सूचनाओं से परम पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्त तथा ज्ञानभंडार के संचालकों को हस्तप्रतों के रखरखाव तथा उसकी सुरक्षा से सम्बन्धित यदि कोई विशेष जानकारी प्राप्त होगी, तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा। हमारी ओर से ऐसे ही उपयोगी विषय भविष्य में भी प्रस्तुत किये जाएँगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्त कुमार

ग्रन्थ नाम- शास्त्राभ्यासनी कळा, **कर्ता**- मुनि श्री गुणहंसविजयजी, **प्रकाशक**- कमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद, **प्रकाशन वर्ष**- वि. सं. २०६९, **भाषा**- गुजराती, **विषय**-पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों के अध्ययन-अध्यापन हेतु शास्त्रीय टीकाग्रंथों के मूल पाठ को सही ढंग से समझने एवं अर्थनिर्णय करने का विस्तृत परिचय।

प्रस्तुत ग्रंथ संयम के मार्ग में अग्रसर पूज्य महात्माओं के लिए प्रकाश स्तम्भ की तरह है, जिससे यह पता चलता है कि अब इसके बाद क्या? जिस प्रकार लम्बे सफर में निकले हुए यात्री को रास्ते पर लगे मील के पत्थर मार्गदर्शक का कार्य करते हैं, उसी प्रकार संयम के मार्ग पर अग्रसर पूज्य महात्माओं के लिए यह पुस्तक मार्गदर्शक है।

पूज्य मुनि श्री गुणहंसविजयजी म. सा. ने सर्वप्रथम स्वाध्याय मार्गदर्शिका नामक पुस्तक को प्रस्तुत किया, जिसमें अनेक शास्त्रों के साक्ष्यों के आधार पर तार्किक रूप से अध्ययन-अध्यापन के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। शास्त्राभ्यास मुनि जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण है, शास्त्रों का अध्ययन क्यों करना चाहिए? किससे करना चाहिए? कौन-कौन से शास्त्रों का? किस क्रम से अभ्यास करना चाहिए? इन सभी बातों को बहुत ही तर्कपूर्ण एवं सटीक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

शास्त्राभ्यासनी कळा ग्रंथ के अन्तर्गत पूज्यश्री ने बहुत ही सरल एवं सुगम्य भाषा में यह बताया है कि मूल पाठ एवं संबंधित टीका आदि के पाठों का अभ्यास किस प्रकार करना चाहिए, जिससे शीघ्र ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। टीका में खास अर्थ में प्रयुक्त होने वाले खास प्रतीकात्मक शब्दों का एवं उनके प्रासंगिक अर्थघटन का परिचय दिया गया है। टीकाकार अपनी कथ्य बात को, अपने स्वरस एवं मतांतर आदि को किस तरह अभिव्यक्त करते है, कथन में रही हुई जटिलताओं को कैसे सुलझाना आदि अनेक बाते खूब ही अच्छी तरह से संकलित करके अध्येताओं के लिये प्रस्तुत की है।

पूज्यश्री की भावना है कि पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत को सर्वप्रथम उन विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जो उनके संयमजीवन में उपयोगी हो। ऐसा नहीं कि अनेक शास्त्रों का अध्ययन तो कर लिया किन्तु संयमजीवनोपयोगी ज्ञान की प्राप्ति ही नहीं हो पाई, जो सर्वप्रथम अपेक्षित था।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस प्रकार आधुनिक व्यावहारिक शिक्षण पद्धति में अलग-अलग कक्षाओं के लिए अभ्यासक्रम बने हुए हैं। उस क्रम के अनुसार ही अध्ययन किया जाता है। जैसे प्राथमिक स्तर का अध्ययन करने वाला व्यक्ति सामान्य जीवन जीने के योग्य हो जाता है। उस निश्चित कक्षा के बाद विशिष्ट विषयों के लिए रास्ते अलग होते हैं, जहाँ से आगे अध्ययन करने के बाद व्यक्ति किसी विशिष्ट क्षेत्र में विशेषज्ञ बनता है।

प्रस्तुत ग्रंथ में जितने भी दृष्टान्त दिए गए हैं, प्रायः उत्तराध्ययनसूत्र-शान्तिसूरि वृत्ति प्रथम अध्ययन और उपदेशमाला-सिद्धर्षिगणि की वृत्ति में से लिए गए हैं। शास्त्राभ्यासनी कळा में जिन कलाओं को दर्शाया गया है, उनके अभ्यास (प्रैक्टिस) के लिए पूज्यश्री ने शास्त्राभ्यासनी कळानी कसोटी नाम से उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन (विनय अध्ययन) की शान्तिसूरि कृत वृत्ति तथा उपदेशमाळा की ५५ गाथाओं तथा उसकी सिद्धर्षिगणि कृत वृत्ति का प्रस्तुत पुस्तक में निदर्शित सिद्धांतों का यथा स्थान परिचय करवाते हुए अलग पुस्तक के रूप में बहुत सुन्दर विवेचन करके प्रकाशित करवाया है। शास्त्राभ्यास करने के लिए, उन दोनों पुस्तकों का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

शास्त्राभ्यासनी कळा के साथ-साथ अभ्यास मार्गदर्शिका, उपदेशमाळा सिद्धर्षिगणि कृत वृत्ति एवं उत्तराध्ययनसूत्र की शान्तिसूरि कृत वृत्ति ये चारों ग्रंथ पूज्यश्रीजी की दृष्टि में संयमी महात्माओं के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। शास्त्र भी है, अभ्यास करनेवाले भी हैं, किन्तु योग्य विधि एवं समझ के अभाव में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः किसी भी कार्य को करने के लिए यदि स्वयं अनुभव नहीं हो तो जिस प्रकार एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शास्त्राभ्यास हेतु भी यह ग्रंथ पूज्यश्रीजी की एक सीमाचिह्नरूप प्रस्तुति है।

प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन एवं मुद्रण भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा परिवार का यह सौभाग्य है कि पूज्यश्री ने इस पुस्तक की रचना में ज्ञानमंदिर में संकलित ग्रंथों का अधिक उपयोग किया है। संघ, विद्वद्वर्ग, जिज्ञासु इसी प्रकार के और भी उत्तम प्रकाशनों की प्रतीक्षा में हैं। मुनिश्री की साहित्यसर्जन यात्रा सदैव जारी रहे, ऐसी शुभेच्छा है।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Acharya Padmasagarsuri

दीपावली एवं नूतन वर्ष की मंगलमय शुभकामनाएँ

भगवान महावीरस्वामी के निर्वाणोत्सव तथा लब्धिनिधान गणधर गौतमस्वामी के केवलज्ञान की प्राप्ति के मंगलमय अवसर पर आपको एवं आपके समस्त परिवार को खूब-खूब आशीर्वाद।

वीर संवत् २५४७ का यह नववर्ष आपके एवं आपके समस्त परिवारजनों के लिए धर्ममय, मंगलमय, सुखद एवं समृद्धियुक्त हो ऐसी हार्दिक शुभकामनाएँ। आप सबके लिए इस नूतनवर्ष का प्रत्येक दिन प्रगति एवं उन्नति से भरा हो, धार्मिकता से परिपूर्ण हो और देव-गुरु की कृपा आप सभी पर निरंतर बरसती रहे, इन मंगल कामनाओं के साथ पुनः पुनः अंतर के असीम आशीर्वाद।

आचार्य पद्मसागरसूरि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra Koba-382426. Gandhinagar
079-23276204/5 Fax:079-23276249 @ kobatirth@yahoo.com +91 97266 17570

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY). Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

कोबा तीर्थ से LIVE

जीवन की उन्नति के लिए - महाप्रभावसंपन्न
नूतनवर्ष का मांगलिक एवं गौतम रास

श्रद्धालुओं के लिए
स्वर्णिम अवसर

YouTube के माध्यम से राष्ट्रसंत पूज्य - आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की गुरुवाणी से लाभान्वित हो सकते हैं।

: शुभ दिन :
16 नवम्बर 2020, सोमवार
समय : सवेरे 6:15

: लाभार्थी :
श्री चिमनलाल पोपटलाल राणा शेठ
हस्ते : विक्रम चिमनलाल ब्रोकर परिवार

आयोजक : श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा - गांधीनगर (अहमदाबाद)

Aacharya Shri Padmasagarsurishwarji Maharaja GURUKRUPA1990

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only